P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बंदिश का अर्थ, गुण तथा पंडित कुमार गन्धर्व की बंदिशों की प्रासंगिकता

रवि जोशी
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
डी.एस.बी परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखंड

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वर और लय से बद्ध रचना बंदिश अथवा "चीज" कहलाती है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत अपने विविध घरानों के लिए जाना जाता है, जैसे ग्वालियर, आगरा, किराना तथा जयपुर इत्यादि। प्रत्येक घराने की अपनी कुछ खास विशेषताएँ होती हैं जैसे आवाज लगाने की शैली, विशेष रागों तथा तालों का चयन इत्यादि।

इसी क्रम में बंदिशें भी किसी घराने की विशेष रीति अथवा शैली को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होतीं हैं। प्रत्येक घराना अपनी कुछ खास पारंपरिक बंदिशों के लिए प्रसिद्ध होता है।

भारतीय संगीत में समय–समय पर विविध घरानों के कलाकारों जैसे उस्ताद फैयाज खां "प्रेमपिया," पं रातंजनकार "सुजान," उस्ताद बड़े गुलाम अली खां "सबरंग," पं जगन्नाथ बुआ पुरोहित "गुनिदास" एवं पं रामाश्रय झा "रामरंग" इत्यादि ने परंपरागत घरानेदार बंदिशों के गायन के साथ–साथ स्वनिर्मित बंदिशों की रचना भी की।

पंडित कुमार गन्धर्व एक उच्चकोटि के कलाकार तथा बंदिश रचनाकार थे जिन्होंने नवीन विषयवस्तु, भाषा एवं नए बिम्बों का प्रयोग कर, भारतीय संगीत के सभी घरानों के लिए उपयुक्त नवीन बंदिशों की रचना की तथा संगीत में नवनिर्मिति कर, भारतीय शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण रचनात्मक योगदान प्रदान किया।

मुख्य शब्द : बंदिश, घराना, वाग्गेयकार, ताल, राग, निबद्ध, अनिबद्ध ।

प्रस्तावना

बंदिश का साधारण अर्थ, स्वर, ताल तथा पद में सुबद्ध व नियोजित रचना है। पं शाङर्गदेव ने अपने ग्रन्थ, संगीत रत्नाकर में प्रबंध, जिसे आज की बंदिश का पर्याय कहा जा सकता है, के लिए वर्णित किया है–"प्रबंध्यते इति प्रबंध"। इस दृष्टिकोण से किसी भी बंधी हुई रचना को प्रबंध की संज्ञा दी जा सकती है। संगीत रत्नाकर में "गान" के दो भेद "निबद्ध" तथा "अनिबद्ध" कहे गए हैं।

इन भेदों में बंदिश निबद्ध गान के अंतर्गत आती है।

राग संगीत में बंदिश का बहुत महत्व है। बंदिश एक ऐसा माध्यम है जिसका आधार लेकर कलाकार विविध स्वर संचारों से राग प्रस्तुतिकरण की क्रिया को आगे बढ़ाता है। राग संगीत में बंदिश का ध्येय राग के सूक्ष्म सौंदर्य को विविध रंगों में प्रस्तुत करना होता है। बंदिश राग की प्रकृति का दर्पण होती है, जिनमें राग की प्रकृति और चलन को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

एक ही राग में अनेक रचनाएं होतीं हैं जिनके द्वारा उस राग की विविध आकृतियाँ स्पष्ट होती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय शास्त्रीय संगीत में बंदिश अथवा "चीज" का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में सदारंग–अदारंग से लेकर अनेक वाग्गेयकारों ने अपनी सुन्दर बंदिशों से भारतीय संगीत को समृद्ध किया है। पं कुमार गन्धर्व भी इसी क्रम में एक उच्चकोटि के बंदिश रचनाकार (वाग्गेयकार) हुए है जिन्होंने लोकजीवन एवं लोकसंस्कृति से प्रेरणा लेकर सुन्दर बंदिशों की रचना की। प्रस्तुत शोधपत्र में बंदिश के महत्व तथा पं कुमार गन्धर्व की बंदिशों की रचना–प्रक्रिया एवं वर्तमान शास्त्रीय संगीत में उनकी प्रासंगिकता के अध्ययन के साथ–साथ आधुनिक समय में पं कुमार गन्धर्व की बंदिशों की समसामयिकता की ओर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

बंदिश के गुण

पं शार्ङ्गदेव ने संगीत रत्नाकर में गीत अर्थात बंदिश के निम्नलिखित दस गुण बताए हैं –

"व्यक्तं पूर्णं प्रसन्नं च सुकुमारमलंकृतम'
समं सुरक्तं श्र्लक्षणं च विकृष्टं मधुरं तथा" ।

1. व्यक्त–स्वर, छंद, राग, पद आदि और प्रकृति प्रत्यय का स्पष्ट उच्चारण युक्त।
2. पूण्ज्ञ–पूर्णांक गमक से युक्त।
3. प्रसन्न–प्रगट अर्थ और शीघ्र बोध होने वाला।
4. सुकुमार–कंठ से उत्पन्न स्वर युक्त।
5. अलंकृत–मंद्र, मध्य और तार इन तीनों स्थानों में अलंकृत।
6. सम–वर्ण लय और स्थान के समत्व से युक्त।
7. सुरक्त–वीणा, वंशी और कंठध्वनि एकता या सामंजस्य से युक्त।
8. श्लक्षण–नीच और उच्च, द्रुत और मध्यादि में मसृणता सामान भाव में सुरक्षित हो।
9. विकृत–भरत आदि द्वारा उच्चारण ही इस नाम से कहा जाता है अतएव इसका इस रूप में उच्चारण से युक्त होना चाहिए।
10. मधुर–विशेष भाव से लावण्यपूर्ण और चित्ताकर्षक ध्वनि से युक्त।

बंदिश के सामान्य गुण

संगीत रत्नाकर के अनुवादक श्री सुरेश चन्द्र बंधोपाध्याय ने पं शार्ङ्गदेव के अनुसार बंदिश के निम्नलिखित सामान्य गुण वर्णित किए हैं–

1. बंदिश रंजक स्वर सन्निवेशों से युक्त होनी चाहिए।
2. गीत में प्रयुक्त शब्द गेय होने के साथ–साथ सरल और भाव व्यंजक हों, तथा छंदोबद्ध हों।
3. गीत में प्रारंभ से अंत तक निर्दिष्ट भाव का परिपोषण हो। गीत में शब्दाडम्बर न हों।
4. बंदिश में राग के शास्त्रीय नियम, वर्ज्यावर्ज्य अल्प वक्र वादी, संवादी इत्यादि स्वरों और राग रूप को ध्यान में रखा गया ळो।
5. बंदिश का उठाव और अंत आवृत्तियों के परस्पर सामंजस्य, सौन्दर्यवृद्धि और आकर्षण के मुख्य स्थलों का ध्यान रखना आवश्यक है।
6. बन्दिश की स्वर रचना में आवाज की साधारण मर्यादा का भी ध्यान रखना आवश्यक है। अतितार या अतिमंद्र का व्यवहार नहीं करना चाहिए।
7. बंदिश के स्वरों का अंतःचलन एवं स्वर श्रृंगार भी राग की प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए, जैसे गंभीर प्रकृति के रागों में मींड, गमक का प्रयोग तथा खटके मुरकी का अल्पत्व अथवा निषेध।
8. बंदिश में राग और काव्य की भावनात्मक एकरूपता होनी चाहिए।
9. स्वरों के स्वाभाविक प्रभाव के अनुकूल स्वर कल्पना आनी चाहिए। स्वाभाविक मोड़ की अवहेलना करने से भावों में व्यवधान उत्पन्न होता है।
10. बंदिश में ताल का चयन भी विशिष्ट गीत विधा के अनुकूल करना चाहिए।
11. वभिन्न शैलियों की रचनाओं में उनकी विशेषताओं का पूर्णरूप से पालन होना चाहिए, जैसे ध्रुपद में स्वर की दृढ़ता, तालाखंड, सादगी और लायाभास, खयाल में तानें मुखड़ा अंत लय की विश्रांति की संभाल, ठुमरियों में, भाववाचक स्वरसमूहों, मधुरता, ताल की लोच और टप्पा गायन शैली में खटका युक्त चालित तानों में गुंथाव का महत्व होता है।
12. बंदिश के लिए ताल का चयन भी विशिष्ट गीतविधा के अनुरूप करना चाहिए।
13. बंदिश में राग का स्वरूप स्पष्ट होना चाहिए, साथ ही बंदिश रागदारी संगीत की भव्यता और माधुर्य से ओत–प्रोत होनी चाहिए।

इन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर बनी रचना निश्चय ही अनूठी और स्मरणीय होगी।

पं कुमार गन्धर्व की बंदिशों की प्रासंगिकता

नवनिर्मिति प्रत्येक ललित कला के संवर्धन की पहली शर्त है, कोई भी ललित कला चाहे वह संगीत हो, मूर्तिकला हो, अथवा चित्रकला हो, नवनिर्माण के आभाव में नीरस तथा बोझिल प्रतीत होती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के सन्दर्भ में बंदिशों के नवनिर्माण का इतिहास बहुत सुखद रहा है।

स्वर्गीय पं.विष्णु नारायण भातखंडे, पं.विष्णु दिगंबर पलुस्कर से लेकर पं.विनायकराव पटवर्धन, प्रो.बी. आर.देवधर इत्यादि अनेकानेक गुरुजनों ने अपने–अपने रचना संग्रह प्रकाशित कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

यहाँ पर एक प्रश्न यह उठता है कि, जब बंदिशों का इतना विपुल भण्डार उपलब्ध था तो पंडित कुमार गन्धर्व को स्वयं बंदिशों की रचना कर, उन बंदिशों का "अनूपरागविलास भाग एक व दो" संग्रह प्रकाशित करने की आवश्यकता क्यों प्रतीत हुई।

इस प्रश्न का स्वाभाविक उत्तर यह है कि अब तक प्रकाशित हुए संग्रह अधिकतर संकलनात्मक थे किन्तु कुमार गन्धर्व द्वारा प्रस्तुत बंदिशों का संकलन अनूपरागविलास सृजनात्मक तथा नवनिर्मित है।

आज से लगभग ढाई सौ वर्ष पूर्व सदारंग, अदारंग, मनरंग तथा हररंग इत्यादि वाग्गेयकारों ने अपने कालखंड में श्रेष्ठतम बंदिशों की रचना कर तत्कालीन समय में नवनिर्माण किया।

यहाँ पर पं भातखंडे जी का स्मरण आवश्यक है जिन्होंने उपरोक्त वाग्गेयकारों तथा स्वयं की बंदिशों को संकलित तथा लिपिबद्ध कर "क्रमिक पुस्तक मालिका भाग एक से छः" खण्डों में प्रकाशित कर एक एतिहासिक कार्य किया।

भातखंडे जी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में भ्रमण कर, विभिन्न घरानों के पंडितों और उस्तादों से मौखिकरूप से खानदानी चीजे अथवा बंदिशे एकत्रित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

यहाँ पर एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि, आज जिस रूप में क्रमिक पुस्तक मालिका से हम बंदिशें गा अथवा विद्यार्थियों को सिखा रहे हैं क्या इनका मूल स्वरूप भी यही था? इस सम्बन्ध में श्री वामन हरि देशपांडे लिखते हैं " पंडित भातखंडे आदि संग्राहकों ने इतना प्रचंड कार्य किया है फिर भी उनके ग्रंथों में पहले के संगीतज्ञों द्वारा बाँधी गयी असली बंदिशें कितनी है, स्वरकारों द्वारा रची गयी स्वरावलियों की सच्चाई पं

भातखंडे तक पहुँचते–पहुँचते किस मात्रा में बची रही, बंदिशों के पाठ में कितने अपभ्रंश घुस आए हैं, आदि महत्वपूर्ण प्रश्न अनिर्णित ही रह जाते हैं। मतलब यह कि दो सौ वर्षों की अवधि में उस जमाने की नवनिर्मित बंदिशों के स्वरूप में आमूलाग्र परिवर्तन हो गया ऐसी भी संभावनाएं हैं।

कुमार जी के प्रस्तुत संग्रह के बारे में इस प्रकार के किसी भी संदेह की गुंजाइश नहीं है। उनका सारा सृजन उनका है। उसे लिपिबद्ध उन्होंने स्वयं किया है और स्वरावलियाँ भी उन्हीं की उपज हैं, इसलिए उसमें भ्रष्टाचार की संभावनाएं हैं ही नहीं, वह बिलकुल तरोताजा है" ।

पं.कुमार गन्धर्व की बंदिशें उनकी स्वयं की प्रयोगशीलता का परिणाम हैं। उनकी रचनाओं में काव्य भी उन्हीं का है तथा स्वरावलियाँ भी स्वयं उन्हीं की हैं। कुमार जी ने अपनी बंदिशों में "सास बहू मोरी जनम की बैरन" जैसे घिसे पिटे काव्य की सदा उपेक्षा की है। पं. कुमार गन्धर्व ने अपनी बंदिशों के काव्य में नए बिम्बों को स्थान दिया, चाहे वह नायक–नायिका भेद सम्बन्धी रचना हो अथवा ईश्वर भक्ति या संगीत के मर्म संबंधी विषयों पर आधारित बंदिश हो।

पंडित कुमार गन्धर्व का कथन था कि थोड़ा बहुत गाना आते ही लगभग सभी गायक बंदिशें बनाने और गाने लगते हैं, किन्तु बंदिश बनाई नहीं जाती वह उत्स्फूर्त आती है तथा स्वर, लय, राग सहित आकार लेती है। श्री वसंत पोतदार के अनुसार अपनी पुस्तक कुमार गन्धर्व में लिखते है– "सिर पे धरी गंग आप शंकरा में ही क्यों गाते हैं? ऐसा पूछने पर कुमार जी बोलते थे– शंकरा में बंदिशें बहुत कम हैं यह मैं जानता था। वह मेरे दिमाग को कचोट रहा था। तभी सिर पे धरी गंग ये बोल सूझे शंकरा आया मतलब निश्चित क्या हुआ यह समझ लीजिए। राग, लय और शब्द सारे एक साथ आए। बाद में चिपकाए नहीं गए। बंदिश में इन तीनों का जन्म एक साथ होता है। सिर्फ कविता को एक राग में फिट करना यानी बंदिश, यह बंदिश की व्याख्या नहीं है। ऐसा नहीं कि पहले महीने में काव्य तैयार हुआ और अगले महीने में उसे शंकरा की चौखट में ठोंक दिया। वह एक साथ होने वाली क्रिया है"।

पं.कुमार गन्धर्व की बंदिशों में स्वर और शब्द रचना एक साथ हुई है। पहले काव्य बनाकर रख लिया तदोपरांत उसमें अमुक राग की स्वरावलियों का संयोजन कर लिया, इस प्रकार की प्रक्रिया कुमार जी ने अपनी बंदिशों की रचना में कदापि उपयोग नहीं की। इनकी बंदिशें घटनाओं से प्रेरित हैं, यही कारण है कि यह बंदिशें बिलकुल नयी और तरोताजा महसूस होती हैं।

बंदिशों की रचना के सन्दर्भ में श्री वामन हरि देशपांडे पं.कुमार गन्धर्व के विचार बताते हुए लिखते हैं कि– "उनका कहना है कि उन्हें यात्रा करते समय या अन्यत्र कोई दृश्य दिखाई दे जाता है अथवा कोई घटना घट जाती है, वह दृश्य किसी पहाड़ी के निकट दो नदियों का संगम हो या सड़क के दोनों ओर लगी वसंत ऋतु में लाल–लाल फूलों से सम्पूर्णतया आवृत पलाश वृक्षों की कतार हो या फिर वह घटना किसी काली मंदिर में चढ़ाए जाने वाले बकरे की बलि हो, या कोई अपरचित स्त्री पहचान होते हुए भी उसे नहीं दर्शाती तो वे एकाएक कुछ गुनगुनाने लगते हैं और इस प्रकार गुनगुनाते–गुनगुनाते उन्हें बंदिश के स्वर एवं शब्द दोनों एक साथ सूझने लगते हैं"।

उपरोक्त कथन के आधार पर पं.कुमार गन्धर्व द्वारा स्वरचित बंदिशों के कुछ उदहारण इस प्रकार हैं–

उदाहरण 1

राग मधमाद सारंग , ताल त्रिताल, लय मध्य

स्थाई– अगिन रंग फूला केसूला
लाल रंग फूला केसूला
मग में इत उत बारिल तरु मोहे ।।

अंतरा– भीम तरु ये भी, घेरो मन मेरो
ऐसो रितुराज आवत बन सोहे ।।
(अकोला से यवत जाते समय)

उदहारण 2

राग बागेश्री, त्रिताल, लय मध्य

स्थायी– टेसुल बन फूले रंग छाए
भंवर मन लेट फिरत मदभरे ।।

अन्तरा– अरे रसलोभीया, हमें ना तरसावो
पिया जो परदेसा, जरत मन मेरो ।।

उदाहरण 3

राग मधसुरजा, ताल त्रिताल, लय ठाय और मध्य

स्थाई– बचाले मोरी मां मातारी
घर में ललुआ अकेलो बिन मोहे ।।

अन्तरा– अरज यही तोरे पास मेरो योहै
घर में ललुआ अकेलो बिन मोहे

उदाहरण 4

राग गौडमल्हार, ताल त्रिताल, लय मध्य

स्थाई– न बताती तू पैछान
भूल मेरी जान तू ।।

अन्तरा– याद करत मैं वो प्यार
भूल न जा पैछान तू ।।

पं.कुमार गन्धर्व के पास परम्परागत बंदिशों का भण्डार था, जिस पर बहुत अधिक शोध करने के पश्चात ही उन्होंने स्वयं को नवीन बंदिश रचना करने का अधिकारी समझा। पं.कुमार गन्धर्व ने अपनी रचनाओं का संकलन "अनूपरागविलास" प्रकाशित करने से पूर्व इन बंदिशों को भलींभाँति परखा, स्वयं के कार्यक्रमों में उन्हें अनेकानेक बार प्रस्तुत कर महफिल के धर्मकांटे पर खरी उतरने के बाद ही उन रचनाओं का संकलन प्रकाशित किया।

पं.कुमार गन्धर्व का मानना था कि अधिकतर संगीतकार रागों में नयी बंदिश नहीं बाँध सके, नीरस बंदिशें ही गाते रहे। किसी भी कविता को राग में ढालकर गा लिया क्योंकि काम तो चलना ही चाहिए। जैसे, दरबारी राग में अधिकाँश गायक राग की प्रकृति से विपरीत बंदिशें गाते हुए मिलेंगे।

स्वर्गीय आचार्य बृहस्पति का कथन है–

"स्वर्गीय भातखंडे जी ने बड़े पते की बात कही है। निरक्षर असहृदय अधोशिक्षित गायक चाहे वह कितना ही बड़ा खानदानी हो साहित्य पक्ष को झगड़ा ही समझता है। वह यह ही समझता है कि गान का सम्बन्ध मनोभावों

की अभिव्यक्ति से न होकर राग में निबधी की जाने वाली कलाबाजियों से है। साथ ही उसे राग नियमों का ज्ञान रखने की आवश्यकता नहीं, इसलिए वह रटी हुई बंदिशें गाता है" ।

किसी भी साहित्यिक अथवा सांगीतिक रचना में उसके भाषा पक्ष की महत्ता एक महत्वपूर्ण अवयव है। रचना में चाहे कितने ही मौलिक विचार अथवा संगीतात्मकता हो, यदि उसकी भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से कमजोर हुई तो वह प्रभावशील नहीं रहती।

कुमार गन्धर्व की रचनाओं में प्रयुक्त भाषा पर श्री पुरुषोत्तम लक्ष्मण देशपांडे लिखते हैं– "ये सारे बंदिशें उसने मालवी, ब्रज आदि हिंदी की बोलियों में बांधी हैं। हमारे संगीत की बहुत सी बंदिशें इसी तरह उपबोलियों में ही हैं। गाँव की बोली में भाषा की खास मधुरता रहती है। पिया, बालमवा, सय्याँ जैसे होंठ से सहलाने लायक शब्द सुरों में सहज ही पिघल जाते हैं"

पं कुमार गन्धर्व ने अपनी बंदिशों में मुख्य रूप से हिंदी, ब्रज तथा मालवी भाषा का प्रयोग किया है, तथापि कुछ रचनाओं में उर्दू तथा पंजाबी शब्दों का प्रयोग भी यत्र–तत्र देखने को मिलता है जैसे "बेकरार", "मियां", "दिलबर", "बेकल," "दिलदार" आदि उर्दू शब्द। पंजाबी शब्दों का प्रयोग निम्नलिखित बंदिश में देखा जा सकता है–

राग मुल्तानी, ताल, त्रिताल, लय द्रुत

स्थाई– मियां तुसी वेखले दुनियांदा
अजब तमासा देखा ।।

अन्तरा– समझ समझ कर मन में रसिया
जा दिन पी पूछेंगे पूछेंगे लेखा ।।

भाषा के स्वर व्यंजन के उपयोग पर पं कुमार गन्धर्व बहुत बल देते थें। वे कहते थे "मैं अक्षर को ब्रह्म मानता हूँ"।

शब्दों के भीतर छुपी नादात्मकता का यथोचित प्रयोग कुमार जी की रचनाओं में देखने को मिलता है।

पं कुमार गन्धर्व का मानना था की संगीत में प्रयुक्त शब्दों के किनारे काट देने चाहिए, यही कारण है कि उनकी बंदिशों में "सरस्वती" शब्द का प्रयोग "सुरसती" के रूप में देखने को मिलता है।

पं कुमार गन्धर्व की कुछ बंदिशों में प्रयुक्त शब्दों का वैसे कोई वास्तविक अर्थ नहीं है परन्तु उस स्वरसमूह की नादात्मकता ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने उस शब्द को लेकर ही बंदिश का सृजन कर दिया जैसे अनूपरागविलास भाग 1 पृष्ठ संख्या 56 में राग कामोद की बंदिश "बिन जाना सो गारे जिन बात रे" रचना में बिन जाना शब्द उन्होंने रेल यात्रा के समय एक स्टेशन के नाम से लिया है।

पं कुमार गंधर्व की बंदिशों की विविधता पर प्रकाश डालते हुए उनकी पुस्तक अनूपरागविलास की भूमिका में श्री वामन हरि देशपांडे लिखते है– "अलग–अलग घराने के गायकों को इस संग्रह में ऐसी बंदिशें मिलेंगी कि उन्हें लगेगा कि गोया ये बंदिशें खास हमारे लिए ही बनाई गई है। मिसाल के लिए राग कामोद में "ऐसन कैसन" बंदिश ग्वालियर घराने वालों को अपने घराने की प्रतीत होगी तो किराना गायकों को लगेगा कि बसन्त में निबद्ध "सपने में मिलती" उन्हीं के लिए है ।

इसी प्रकार जयपुर गायकों को जँचेगा कि गौरी बसन्त की बंदिश "आज पेरीले" खास तौर पर उनके लिए ही है। मतलब यह कि इस संग्रह में, विभिन्न घराने के गायक विशेषकर 'हमारे लिए ही' की गई अनेक बंदिशें पायेंगे"।

निष्कर्ष

पं.कुमार गन्धर्व एक उच्चकोटि के मंचीय कलाकार होने के साथ–साथ एक उत्तम वाग्येयकार भी थे, जिन्होंने अपनी बंदिशों में नवीन बिम्बों तथा स्वरसंयोजनों का प्रयोग किया। पं कुमार गन्धर्व ने राग की प्रकृति एवं भावों के अनुरूप शब्दों का चयन कर परम्परा में रहते हुए, गुरु महिमा, संगीत साधना, ईश स्तुति, प्रकृति वर्णन, ऋतु वर्णन, श्रृंगार एवं वात्सल्य इत्यादि विषयों पर आधारित सुन्दर बंदिशों का सृजन किया। कुमार गन्धर्व ने अपनी रचनाओं को किसी एक घराने तक सीमित नहीं रखा वरन् उन्होंने भारतीय संगीत के विविध घरानों के लिए नवीन बंदिशों की रचना कर भारतीय शास्त्रीय संगीत को पुष्पित व पल्लवित किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गन्धर्व कुमार अनूपरागविलास (भाग एक एवं दो) कुमार गन्धर्व संगीत अकादमी भानुकुल देवास मध्यप्रदेश*
2. *बंधोपाध्याय सुरेश चन्द्र,संगीत रत्नाकर अनुवाद कलकत्ता*
3. *शार्ङ्गदेव, संगीत रत्नाकर, सम्पादक एस.एस.शास्त्री, मद्रास अडयार पुस्तकालय 1986 ,भाग 3*
4. *देशपांडे वामन हरि, रसास्वाद, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी*
5. *बृहस्पति आचार्य, संगीत चिंतामणि, बृहस्पति पब्लिकेशन्स नई दिल्ली*
6. *वाजपेयी अशोक, कुमार गन्धर्व, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली*
7. *पोतदार वसंत, कुमार गन्धर्व, मेधा बुक्स, नई दिल्ली*